

कहानी

करोड़पति सूरज प्रकाश

इस समय भी वह लिफ्ट के पास खड़ा इशारे से किसी न किसी को अपनी तरफ बुला रहा होगा या फिर कैंटीन में बैठा अपनी ताजा रचना जोर-जोर से पढ़ रहा होगा। जिसने भी उससे आँख मिलाई, उसी की तरफ उँगली से इशारा करके अपनी तरफ बुलाएगा और भर्राई हुई आवाज में कहेगा, 'मैं आपको एक शब्द दूँगा। आप उसका मतलब किताबों में ढूँढ़ना। किसी पढ़े लिखे आदमी से पूछना। मैं आपसे सच कहता हूँ, उस शब्द से यह ऑफिस, यह शहर, यह दुनिया सब बदल जाएँगे, बेहतर हो जाएँगे। आप मुझे मिलना। अगर आपके पास वक्त न हो।' यहाँ आते-आते उसकी साँस बुरी तरह फूल चुकी होगी और वह हाँफने लगेगा। वहीं बैठ जाएगा। साँस ठीक होते ही फिर से उसका यह रिकॉर्ड चालू हो जाएगा। सामने कोई हो, न हो। तब तक बोलता रहेगा जब तक दरबान उसे खदेड़ कर बाहर न कर दे, या भीतर न धकेल दे।

यह करोड़पति है। असली नाम पुरुषोत्तम लाल। चपरासी है। आज कल सनक गया है। कभी खूब पैसे वाला हुआ करता था। खेती-बाड़ी थी। दो-तीन घर थे। शहर के कई चौराहों पर पान के खोखे थे। आजकल खाने तक को मोहताज है। अपने अच्छे दिनों में उसने सबकी मदद की। बेरोजगार रिश्तेदारों को काम धंधे से लगाया। इसी चक्कर में सब कुछ लुटता चला गया। कुछ रिश्तेदारों ने लूटा और कुछ ऑफिस के साथियों ने निचोड़ा। अपने पैसों को वसूलने के लिए करोड़पति सबके आगे गिड़गिड़ाता फिरा। नतीजा यह हुआ कि वह सनक गया। बहकी-बहकी बातें करने लगा। जब पी लेता है तो और भी बुरी हालत हो जाती है। कभी गाने लगता है तो कभी जोर-जोर से बोलने लगता है।

भगवान जाने कितना सच है या न जाने लोगों की उड़ाई हुई है। एक दिन इसी सनक के चलते एक दिन ऑफिस के बाद घर जाते समय एक थैले में ढेर सारी चीजें, पेपरवेट, पंचिंग मशीन, कागज, पैन-पैन्सिल जो भी मेजों पर पड़ा नजर आया, थैले में ढूस लिया। शायद दिन में किसी से कहा-सुनी हो गई होगी। उसी को जोर-जोर से कोसता हुआ बाहर निकला तो दरबान ने यूँ ही पूछ लिया - थैले में क्या ले जा रहे हो करोड़पति? तो उसी से उलझ गया। ऊँच-नीच बोलने लगा। दरबान ने उसे वहीं रोक लिया और रिपोर्ट कर दी। करोड़पति सामान चोरी करके ले जा रहा है।

करोड़पति पकड़ा गया। सुरक्षा अधिकारी ने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की कि उसके खिलाफ मामला न बने, बेचारा पहले ही दुनिया भर का सताया हुआ है। लेकिन पता चला कि करोड़पति अक्वल तो पिए हुए है और दूसरे, ढंग से बात करने को तैयार नहीं है। कभी कहे कि ये सामान फलों साहब ने अपने घर पर मँगवाया है, तो कभी कहे

कि - वह ऑफिस की नौकरी छोड़ रहा है। अब इसी सामान की दुकान खोलेगा। उसने अपने आप को यह कह कर और भी फँसा लिया कि - यह तो कुछ भी नहीं है, वह तो अरसे से थैले भर-भर कर सामान ले जाता रहा है।

उसके खिलाफ मामला बना और उसे सस्पेंड कर दिया गया। तबसे और सनक गया है।

मैले कुचैले कपड़े, एकदम लाल आँखें, नंगे पैर, हाथ में पाँच सात कागज, दाढ़ी बढ़ी हुई। तब से रोज सुबह लिफ्ट के पास खड़ा सबको पुकारता रहता है। कोई उसके सामने नहीं पड़ना चाहता। वे तो बिल्कुल भी नहीं जिन्होंने उसकी सारी पूँजी लूट कर उसकी यह हालत बना दी है।

उसकी सबसे बड़ी तकलीफ यह है कि वह घर और बाहर दोनों ही जगह से फालतू हो गया है। घरवालों की बला से वह कल मरता है तो आज मरे। कम से कम उसकी जगह परिवार में किसी को तो नौकरी मिलेगी। उनके लिए तो वह अब बोझ ही है। ऑफिस में उसकी परवाह किसे है? वहाँ वह अकेला पागल ही तो नहीं। एक से एक पागल भरे पड़े हैं। कुछ हैं और कुछ बने हुए हैं। जो नहीं भी हैं वो सबको पागल बनाए हुए हैं।

कोई भी करोड़पति से बात नहीं करना चाहता। उसे देखते ही सब दाँ-बाँ होने लगते हैं। दुर-दुर करते हैं। कौन इस पागल के मुँह लगे। अगर कोई धैर्यपूर्वक उसकी बात सुने, उससे सहानुभूति जताए तो शायद उसके सीने का बोझ कुछ तो उतरे। लेकिन किसे फुर्सत?

जब उसकी इन्क्वायरी के लिए तारीख तय हुई तो यूनियन से उसका डिफेन्स तय करने के लिए कहा गया। यूनियन को भला ऐसे कंगले में क्या दिलचस्पी हो सकती थी। उन्होंने भी टालमटोल करना शुरू कर दिया। जब करोड़पति को उनके रुख का पता चला तो वह वहाँ भी गाली-गलौज कर आया - मुझे आपकी मदद की कोई जरूरत नहीं। मैं अपना केस खुद लड़ लूँगा। गुस्से में आकर उसने यूनियन से ही इस्तीफा दे दिया - चूँकि पुरषोत्तम लाल यूनियन का मेंबर नहीं है, अतः यूनियन की तरफ से डिफेन्स उपलब्ध कराना संभव नहीं है।

मजबूरन ऑफिस ने ही उसके लिए डिफेन्स जुटाया और केस आगे बढ़ाना शुरू किया। लेकिन करोड़पति अपने पैरों पर खुद ही कुल्हाड़ी मारने को तैयार हो तो कोई क्या करे! कभी इनक्वायरी में नहीं आएगा। आएगा भी तो बात करने लायक हालत में नहीं रहेगा। अगर सारी स्थितियाँ उसके पक्ष में हों, वह आए, बात करने लायक हो, तो भी वह वहाँ कुछ ऐसा उलटा सीधा बोल आएगा कि बात आगे बढ़ने के बजाय पीछे चली जाए - मैं एक-एक को देख लूँगा। सब मेरे दुश्मन हैं। मेरी बात ध्यान से नोट कर लो। मैं बाद में फिर आऊँगा। इस तरह की ऊटपटाँग बातें करके लौट आएगा।

इसी तरह ही चल रहा है करोड़पति। पता नहीं, खाना कहाँ से खाता है, पीना कहाँ से जुटाता है। इन दिनों उसे आधी पगार मिलती है जो पगार वाले दिन उसकी बीवी ले जाती है। कम से कम बच्चे तो भूखे न मरें। इस पागल का क्या!

संस्थान ने उसकी हालत पर तरस खा कर फिर से बहाल कर दिया है, अलबत्ता उसकी चार वेतन वृद्धियाँ कम कर दी हैं। उसे नौकरी में वापिस लिए जाने की एक वजह यह भी रही कि उसका ढंग से इलाज हो सके और एक परिवार बेवक्त उजड़ने से बच जाए। लेकिन हुआ इसका उलटा ही है। करोड़पति की हालत पहले से भी ज्यादा खराब हो गई है। काम करने लायक तो वह पहले कभी नहीं था, इधर उसने दो तीन नए रोग पाल लिए हैं।

आजकल वह बात-बात पर इस्तीफा दे देता है। कभी उसे गाने का शौक रहा होगा, कुछेक फिल्मी गीत याद भी रहे होंगे। उन्हीं में से कुछ शब्द आगे पीछे करके ले आता है। टाइपिस्ट सीट पर बैठे भी नहीं होते हैं कि सिर पर आधमकता है - 'इसे टाइप कर दो। अभी किशोर कुमार इसे गाने वाले हैं। वे स्टूडियो में इसकी राह देख रहे हैं। वे नहीं गाएँगे तो मैं खुद गाऊँगा।' और वह वहीं शुरू हो जाता है। भराए हुए गले से करोड़पति गा रहा होता है और सब खी-खी हँस रहे होते हैं। पिछले हफ्ते उसे सस्पेंशन की अवधि की बकाया रकम मिली है। उसी पैसे से पी जा रही दारु का नतीजा है यह।

अगर टाइपिस्ट यह तुकबंदी टाइप करने से मना कर दे, कैंटीन से चाय मिलने में तीन मिनट से ज्यादा लग जाएँ, कोई बिल एक ही दिन में पास न किया जाय तो वह तुरंत इस्तीफा दे देता है। बेशक अगले दिन उसके बारे में भूल जाए और किसी और बात पर कोई नया इस्तीफा दे दे। कई बार उसके पाँच-सात इस्तीफे जमा हो जाते हैं जिन्हें डायरी क्लर्क एक किनारे जमा करती रहती है। जहाँ तक उसके इलाज का सवाल है, करोड़पति को डॉक्टर के पास ले जाया जाता है, उसकी तकलीफ बताई जाती है, दवा भी मिलती है, लेकिन खाने के लिए तो करोड़पति को एक और जनम लेना पड़ेगा।

करोड़पति लापता है। पिछले कई दिनों से न घर पहुँचा है और न ऑफिस ही। वैसे तो पहले भी वह कई बार दो-दो, चार-चार दिनों के लिए गायब हो जाता था, लेकिन जल्द ही मैले-कुचैले कपड़ों में लौट आता था। इस बार उसे गायब हुए महीना भर होने को आया है। उसका कहीं पता नहीं चल पाया है। इस बार पगार वाले दिन उसकी बीवी उसे ढूँढ़ते हुए ऑफिस आई, तभी सबको याद आया कि कई दिन से करोड़पति को नहीं देखा। कई दिन से वह घर भी नहीं पहुँचा था। वैसे तो कभी भी किसी ने उसकी परवाह नहीं की थी, न घर पर न दफ्तर में। अब अचानक सबको करोड़पति याद आ गया था। बीवी को पगार वाले दिन उसकी याद आई थी, बल्कि जरूरत पड़ी थी कि आधी-अधूरी जितनी भी पगार है, करोड़पति से हस्ताक्षर करवा कर ले जाए। अगली पगार तक करोड़पति अपने दिन कैसे काटता था, क्या करता था यह उसकी सिरदर्दी नहीं थी। बेशक कर्जे वसूलने वाले भी पगार के आस-पास मंडराते रहते थे कि उसके हाथ में लिफाफा आते ही अपना हिस्सा छीन लें। लेकिन उसकी बीवी की मौजूदगी में कुछ भी वसूल नहीं कर पाते थे। अलबत्ता बीवी को ही डरा धमका कर सौ-पचास निकलवा पाएँ यही बहुत होता था। वे भी अब परेशान दिखने लगे थे। करोड़पति नहीं है अब क्या वसूलें और किससे वसूलें।

अब अचानक सबको याद आने लगा है कि - किसने करोड़पति को आखिरी बार कहाँ देखा था! किसी को हफ्ता भर पहले स्टेशन पर पूरी-भाजी खाते नजर आया था तो किसी ने उसे सब्जी मंडी में मैले कुचैले कपड़े पहने भटकते देखा था। किसी का ख्याल था कि वह या बिलकुल वैसा ही एक आदमी थैला लिए शहर से बाहर जाने वाली एक बस में चढ़ रहा था। जितने भी लोग थे करोड़पति के बारे में अपने कयास भिड़ा रहे थे, कोई भी यकीन के साथ बताने को तैयार नहीं था। बल्कि कुछ लोग तो इतनी दूर की कौड़ी खोज कर लाए थे कि तय करना मुश्किल था कि किसके कयास में ज्यादा वजन है। एक चपरासी को तो पूरा यकीन था कि पिछले हफ्ते रेलवे पुल के पास भिखारी जैसे किसी आदमी की जो लाश मिली थी, हो न हो वह करोड़पति की ही रही होगी। अलबत्ता यह खबर देने वाले के पास इस बात का कोई जवाब नहीं था कि अगर वह करोड़पति की ही लाश थी तो उसने पहले खबर क्यों नहीं दी? ये और इस तरह की कई अफवाहें अचानक हवा में उठीं और गायब भी हो गईं।

ऑफिस में तो उसकी मौजूदगी-गैर मौजूदगी महसूस ही नहीं की गई थी, लेकिन उसकी बीवी वाकई चिंता में पड़ गई है। उसकी चिंता करोड़पति की पगार को लेकर है, जो उसे बिना करोड़पति के हस्ताक्षर के नहीं मिल सकती है। उसने ऑफिस से करोड़पति की गैर हाजिरी का प्रमाणपत्र ले लिया है और थाने में उसके गुमशुदा होने के बारे में रिपोर्ट लिखवा दी है। किसी तरह रोते-पीटते अपनी गरीबी की दुहाई देते हुए उसके गुमशुदा होने का प्रसारण भी दूरदर्शन पर करवा दिया है। लेकिन इस बीच न करोड़पति लौटा है न उसके बारे में कोई खबर ही मिली है।

तीन महीने तक इंतजार करने के बाद ऑफिस ने हर तरह की कागजी कार्रवाई पूरी करने के बाद संस्थान का मकान खाली करने का आदेश उसकी बीवी को दे दिया है। उसकी बीवी की सारी कोशिशों और अनुरोधों के बावजूद ऑफिस से करोड़पति का एक पैसा भी उसे नहीं मिल पाया है। इस बीच उसने करोड़पति की जगह नौकरी के लिए भी एप्लाई कर दिया है जिसे ऑफिस ने ठंडे बस्ते में डाल दिया है।

करोड़पति की जगह नौकरी पाने के लिए उसे या तो करोड़पति का मृत्यु प्रमाणपत्र लाना पड़ेगा या उसके गुमशुदा होने की तारीख से कम से कम सात साल तक इंतजार करना पड़ेगा।



[शीर्ष पर जाएँ](#)